उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः 848/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 31–07–2025

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की दिनांक 31 जुलाई, 2025 को वर्ष 2025–26 की सम्पन्न ग्यारहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की ग्यारहवीं बैठक, डा. राजर्षि कुमार गौड़, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी), उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 31 जुलाई, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक तथा पादप रोग वैज्ञानिक; बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के पशु चिकित्सा वैज्ञानिक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के वैज्ञानिक; कृषि विभाग; रेशम विभाग; पशुपालन विभाग तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया (उपस्थिति संलग्न)।

सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (01–07 अगस्त 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी के अधिकांश भाग तथा भाभर तराई क्षेत्र का पूर्वी एवं उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक वर्षा सामान्य के आस–पास जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से अधिक होने की संभावना है।

प्रदेश के पश्चिमी मैदानी, दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री से.) कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग तथा बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 30 से 32 डिग्री से. जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 32 से 34 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, बुंदेलखंड क्षेत्र के दक्षिण भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री से. जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 24 से 26 डिग्री से. रहने की संभावना है।

चेतावनीः इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के उत्तरी तराई एवं उससे लगे हुए मध्यवर्ती क्षेत्रों में कहीं–कहीं भारी वर्षा होने की सम्भावना है।

मानसून ऋतु (01 जून से 31 जुलाई, 2025) के दौरान उत्तर प्रदेश में 357.6 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष कुल 337.9 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 6 प्रतिशत कम है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 385.2 मिमी. सामान्य के सापेक्ष 21 प्रतिशत कम कुल 304.6 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 318.9 मि.मी. सामान्य के सापेक्ष 21 प्रतिशत अधिक कुल 385.6 मि.मी. वर्षा दर्ज हुई।

कृषि विभाग से दिनांक 28 जुलाई, 2025 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 106.05 लाख हे. के सापेक्ष 99.48 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का मात्र 93.79 प्रतिशत है। अब तक धान की नर्सरी लक्ष्य 4.33 लाख हे. के सापेक्ष 4.33 लाख हे. में डाली जा चुकी है जो लक्ष्य का 99.93 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 65.00 लाख हे. के सापेक्ष 65.20 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का 100.31 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.83 लाख हे. के सापेक्ष 8.22 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 3.01 लाख हे. के सापेक्ष 2.82 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 11.284 लाख हे. के सापेक्ष 9.43 लाख हे. की बुवाई, तिल फसल लक्ष्य 4.38 लाख हे. के सापेक्ष 3.45 लाख हे. एवं अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 3.19 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है। मूंगफली की फसल लक्ष्य 3.70 के सापेक्ष 2.53 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है एवं उर्द के लक्ष्य 4.83 सापेक्ष 3.41 तथा मूंग के लक्ष्य 0.47 के सापेक्ष

0.39 की बुवाई की जा चुकी है। सोयाबीन के लक्ष्य 0.35 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.40 की बुवाई की जा चुकी है।

बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन व कृषि के अन्य क्षेत्रों हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- धान वाले क्षेत्रों में जहां वर्षा सामान्य से काफी कम हुई हो वहां धान की फसल के स्थान पर सीमित सिंचाई उपलब्धता की दशा में कम समय में तैयार होने वाली बाजरा की संकुल प्रजातियां तथा उर्द/मूंग/तिल की बुआई प्राथमिकता के आधार पर किया जाय। यदि संभव हो तो बाजरे की फसल में मूंग/उर्द एवं लोबिया की सहफसली खेती की जाय जिससे जोखिम की संभावना कम रहे।
- दलहनी एवं तिलहनी फसलों में जल भराव न होने दें, जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
- खेतों मे मेड़बन्दी करके नमी को संरक्षित करें तथा तालाबों, पोखरों एवं झीलों में संरक्षित वर्षा जल को फसलों की क्रान्तिक वृद्धि की दशाओं में सिंचित करने के लिये उपयोग में लायें।
- बुन्देलखण्ड में संकेन (रेज्ड)–बेड विधि से दलहनी एवं तिल व मूंगफली की सह–फसली खेती को अपनाया जाय।
- खरीफ प्याज की पौध की रोपाई कृषि विज्ञान केन्द्रों की सलाह से करें।
- कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश–प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोग्रामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग कृषि रक्षा इकाई व कृषि विज्ञान केन्द्र की सलाह पर करें।
- वृक्षारोपण अभियान में फलदार वृक्षों का भी रोपण करें।
- बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी/जूं के संक्रमण की संभावना प्रबल होती है। इसके बचाव हेतु पशु बाड़े में चूने का छिड़काव करें ताकि किलनी/जूं के अंडे व लार्वा नष्ट हो जाय।
- पशु के शरीर में व्यस्क बाह्य परजीवी के संक्रमण से बचाव हेतु किलनीनाशक दवा का उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से करें।
- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत खुरपका एवं मुखपका (एफ.एम.डी.) बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- जनपदवार दैनिक मौसम पूर्वानुमान एवं चेतावनी https://mausam-imd-gov-in/lucknow/mcdata/district-pdf तथा ग्राम स्तरीय/क्षेत्रीय मौसम पूर्वानुमान https://mausamgram-imd-gov-in/ पर प्राप्त किये जा सकते हैं।
- मत्स्य पालक किसान बन्धु अपने तालाब में फिंगरलिंग 6,000–8,000 प्रति एकड़ या ईयरलिंग 2,000–4,000 प्रति एकड़ की दर से अपने तालाब में डालकर पालन सुनिश्चित करें।

धान की खेती

- पूर्वी उ.प्र. में अगस्त के प्रथम पक्ष में सुगंधित धान की किस्मों की रोपाई करें जिससे दाने की गुणवत्ता व सुगन्ध का विकास अच्छी तरह से हो सके।
- बासमती प्रजातियों में लगने वाले बकानी रोग से प्रभावित पौधों को उखाड़कर जमीन में दबा दें एवं बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम के 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से खड़ी फसल में छिड़काव करें।
- रोपित धान में यदि खैरा रोग लगा है तो रोग नियंत्रण के लिये फसल पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट 2.5 किग्रा. बुझे हुये चूने के साथ 1000 ली. पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से पर्णीय छिड़काव करें।
- धान की फसल में जड़ की सूड़ी से 5 प्रतिशत प्रकोपित पौधे होने की दशा में तथा दीमक का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. 2.5 ली./हे. की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें।
- धान में रोपाई के 15 से 20 दिन बाद नमी की स्थिति में खरपतवार नियंत्रण हेतु बिसपाईरीबैक सोडियम 10 प्रतिशत एस.सी. 0.2 ली. 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- धान में फुदका की रोकथाम हेतु ऐजाडिरेक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 ली. मात्रा 500 से 600 ली. पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

- धान में शीथ ब्लाईट के नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू. पी. अथवा कार्बेन्डाजिम 2 प्रतिशत+ मैंकोजेब 63 प्रतिशत डब्लू.पी को प्रति हे. 500 से 750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें अथवा ट्राइकोडर्मा विर्डी 1 प्रतिशत डब्लू.पी. 2.5 कि.ग्रा. मात्रा को 500 ली. पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव करें।

उर्द/मूंग की खेती

- उर्द की शीघ्र पकने वाली किस्मों (70 से 80 दिन) यथा पंत यू–35, नरेन्द्र उर्द–1, पंत उर्द–31, आई.पी. यू.–2–43, आई.पी.यू.–13–1 तथा आजाद उर्द–1 की बुवाई करें।
- मूंग की किस्मों यथा आजाद मूंग–1, पंत मूंग–1, पंत मूंग–3, पूसा–1431, मेहा 99–125, एम.एच.–2.15, टी.एम.–9937, मालवीय, जनकल्याणी, मालवीय, जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति, मालवीय ज्योति, पंत मूंग 4, नरेन्द्र मूंग–1, पी.डी.एम.–11, आशा की बुआई करें।

श्री अन्न की खेती

- बाजरा की उन्नतशील संकुल किस्मों यथा धनशक्ति, आई.सी.एम.बी.–155, डब्लू.सी.सी.–75, न.दे.पफ.बी.–3 (नरेन्द्र चारा बाजरा–3), राज–171 तथा संकुल किस्मों 86 एम. 84, आई.सी.एम.एच.–451, पूसा–322 तथा पूसा–23 की बुवाई करें।

मक्का की खेती

- मक्के की फसल अधिक पानी के प्रति संवेदनशील है अतः खेत में अधिक पानी की दशा में जल निकासी की व्यवस्था करें।
- मक्का की बुवाई के 45–50 दिन बाद (सिल्किंग स्टेज) नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा की एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।
- मक्के में फॉल आर्मी वर्म के नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी अथवा इमामेक्टिन बेनजोइट 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी अथवा थायोमेथाक्सॉम 2.6 प्रतिशत + लैम्बडासाइहैलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ने में मिट्टी चढ़ायें।
- गन्ने में बैक्टीरियल रॉट बीमारी के लक्षण दिखने पर संक्रमित पौधे को काटकर नष्ट कर दें तथा नियंत्रण हेतु स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.01 प्रतिशत का गन्ने की पत्तियों पर छिड़काव करें।
- शरदकालीन गन्ने की बुवाई हेतु खाली खेत में ढ़ैचा की बुवाई की है तो 50 से 55 दिनों में उसे पलट दें।
- यदि गन्ने की लंबाई पांच फुट हो गई हो तो ढ़ाई फुट की ऊँचाई पर प्रथम बँधाई करें। प्रथम बँधाई हेतु गन्ने को लाइनों में एक लाइन के दो झुण्डों को एक साथ नीचे की सूखी पत्तियों से बँधाई करें।
- लालसड़न रोग से प्रभावित पौधों को जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा थायोफिनेट मिथाइल 0.2 प्रतिशत के घोल से पौधों को नहला दें।
- गन्ने में पाइरीला कीट का प्रकोप हो तो इसके नियंत्रण हेतु यदि खेत में परजीवी प्राकृतिक रूप से दिख रहे है तो खेत में नमी बनाये रखे तथा कीटनाशक का छिड़काव न करें अन्यथा की स्थिति में इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली. प्रति. ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गन्ने में माइट कीट का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत+साइपर 4 प्रतिशत की 750 मि.ली. कीटनाशक को 625 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

सब्जियों की खेती

- खरीफ मौसम में कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती 6–8 फीट की ऊंचाई पर मचान विधि से करनी चाहिए। मचान बनाने के लिए बांस या लोहे के खम्भे का प्रयोग करना चाहिए।
- फूल गोभी की मध्य किस्में पूसा सेंथेटिक, पंत सुभ्रा, पूसा हिम ज्योति, पूसा सुभ्रा, पूसा दिपाली, पूसा हाईब्रिड–2, पूसा शरद, पंत गोभी–4, मोनालीसा आदि किस्मों का 500–600 ग्राम बीज प्रति हे0 की दर से नर्सरी तैयार कर लें।

- भिण्डी की खरीफ में बुवाई हेतु मौसम अभी भी अनुकूल है। इसकी बीज दर 10–12 किग्रा. प्रति हे0 तथा संकर किस्मों के लिए 5–8 किग्रा. बीज पर्याप्त है।
- खरीफ मौसम में लोबिया की खेती करने के लिए 15–20 किग्रा0 बीज प्रति हे0 पर्याप्त होता है, बुआई करने से पहले बीज को राइजोबियम जिवाणु से उपचरित कर लेना चाहिए।
- खरीफ ऋतु की सब्जियों के बीज को ट्राईकोडर्मा पाउडर 5–6 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें।
- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली0 मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- पौधशाला हेतु ऊंचे एवं ढालू स्थान का चयन करें, जिससे वर्षा के पानी का निकास आसानी से हो सके। नर्सरी डालने के लिए 7.5 मीटर लम्बा 1 मीटर चौड़ा और 10–15 सेन्टी0 ऊंचा स्थान बनाना चाहिए।
- सब्जियों में मिक्स क्रापिंग को बढ़ावा दिया जाय तथा जल निकास का उचित प्रबंध करें।
- पूर्व में रोपित बैंगन व मिर्च तथा गोभी के पौधों पर मिट्टी चढ़ायें तथा गोल बैंगन की तैयार पौध की रोपाई करें।
- इस समय सब्जियों में कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों, वर्मीवाश अथवा मैलाथियान 50 ई.सी. की 1 ली मात्रा 500 से 600 ली पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- बेहन हेतु गोभीवर्गीय सब्जियों, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई करें तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई भी यथाशीघ्र करें।
- अदरक के कंद सड़न रोग से बचाव हेतु जल निकास का उचित प्रबंध करें तथा प्रकोप होने पर चेस्टनट कम्पाउंड (11 भाग अमोनियम कार्बोनेट+2 ग्रा. कॉपर सल्फेट) का छिड़काव करें।
- मिर्च में विषाणु रोग हेतु संवाहक कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई.सी. 01 मि.ली./ली. पानी अथवा इमिलाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत की 01 मि.ली. प्रति तीन लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

बागवानी

- आम की गुठली, अमरूद, कटहल, कागजी नींबू आदि के बीजों की बुवाई उठी हुई क्यारियों अथवा पॉलीथीन की थैलियों में करें।
- आम, अमरूद, लीची, आंवला, बेल, जामुन, नींबू, चिरौंजी, लसोढ़ा, महुआ तथा अन्य फलदार पौधों की उन्नत किस्मों का रोपण करें।
- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफ्टिंग एवं लीची व नींबू में गूँटी बॉधने का कार्य करें।
- आम के नवीन बाग लगाते समय परागण हेतु उपयुक्त किस्मों का 10 प्रतिशत रोपण अवश्य करें। दशहरी प्रजाति के साथ बाग में बम्बई ग्रीन, गौरजीत, लखनऊ सफेदा को परागण किस्म के रूप में रोपित करें।
- केले की ऊतक संवर्धित प्रजाति जी–9 की पौध का रोपण पूर्ण करें।
- केले में फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें तथा केले की तलवार पुत्ती को छोड़ते हुये शेष पुत्तियों की कटाई करें।
- फलों की गुणवत्तायुक्त पौध हेतु उद्यान विभाग की पंजीकृत पौधशालाओं, कृषि विश्वविद्यालयों व कृषि विज्ञान केन्द्रों की पौधशालाओं तथा केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ से सम्पर्क करें।
- नींबू में कैंकर रोग से बचाव हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम अथवा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 600 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- तराई क्षेत्रों में आम का शूट गाल सिला कीट के प्रकोप से बचने के लिये डाईमेथोएट अथवा क्विनॉलफास (2 मिली/ली. पानी) का छिड़काव खुले मौसम में करें।
- आम में जाला बनाने वाले टेंट कैटरपिलर कीट की रोकथाम के लिये जालों की सफाई करते हुये क्विनॉलफास (2 मिली/ली. पानी) का छिड़काव करें।

पशुपालन

- नैपियर घास की जड़ों/रूट स्लिप की रोपाई करें, जिससे 4 से 5 वर्ष तक हरा चारा लगातार पशुओं को प्राप्त होता रहे।

- बदलते मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संक्रमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- घोंघेयुक्त तालाबों के आस–पास पशुओं को न चरायें।
- वर्तमान मौसम में पशुओं को गड्ढ़ों में भरे गंदे पानी को पीने से बचायें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें, उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें।
- पशु समस्या निवारण केन्द्र का टोल फ्री नं. 18001805141 है जिसका उपयोग पशुपालक पशु चिकित्सा संबंधी किसी भी समस्या के निवारण हेतु कर सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं0–1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।
- पंडित दीन दयाल उपाध्याय योजना के अन्तर्गत मण्डल/जिला स्तर पर पशु आरोग्य मेलों का आयोजन किया जा रहा है, इन मेलों में निःशुल्क चिकित्सा, दवापान, बधियाकरण, टीकाकरण, लघु शल्य चिकित्सा, आल्ट्रासाउण्ड मशीन द्वारा गर्भ परीक्षण, पशु धन बीमा तथा पशुपालन कार्य हेतु इच्छुक पशुपालकों को किसान क्रेडिट कार्ड के अन्तर्गत पशुपालन घटक के अधीन ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही साथ गोष्ठियों का आयोजन भी सम्पादित किया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय पशु चिकित्सा अधिकारी या निकटतस्थ पशु चिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते है।

मत्स्य पालन

- ग्रो आउट तालाब में फिंगरलिंग मत्स्य बीज संचयन 2000–4000 प्रति एकड़ की दर से शुरू कर दें।
- नर्सरी तालाब में स्पॉन डालने के 15 दिनों के बाद ही रासायनिक उर्वरक का प्रयोग करें।
- माह में एक बार जैविक खाद के रूप में गोबर 400 कि.ग्रा. प्रति एकड़ या सरसों/राई की खली 100 कि.ग्रा./एकड़ एवं सिंगल सुपर फॉस्फेट 15–20 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से घोल कर छिड़काव करें। रासायनिक एवं जैविक उर्वरक के बीच का अन्तराल कम से कम 15 दिन होना चाहिए।
- तालाब में जल स्तर 1.5–2 मीटर बनाए रखें।
- तालाब में वर्षा का पानी आने से यदि जल अशुद्ध हो जाए या अधिक ठंडा हो जाए तो जल की आंशिक निकासी कर साफ पानी भरें।
- जल का पीएच 7–8 के बीच बनाए रखें। आवश्यकता हो तो चूना (200–300 किग्रा/हेक्टेयर) का प्रयोग करें।
- पानी में ऑक्सीजन की मात्रा पर्याप्त रखें तथा सुबह के समय एरेटर का उपयोग करें।
- बारिश के समय चारा डालने से बचें, क्योंकि अधिक चारा अपचय होकर जल को प्रदूषित कर सकता है।
- सप्ताह में एक बार पोटाश (2–3 किग्रा/हेक्टेयर) का प्रयोग करें। जल को कीटाणुरहित रखने हेतु।
- जल की पारदर्शिता 30–40 सेमी के बीच होनी चाहिए। यदि बहुत कम हो जाए तो खाद डालना बंद करें।
- वर्षा के समय तालाब की मेड़ को मजबूत रखें, कहीं से पानी का रिसाव न हो।
- जलनिकास स्थल पर जाली लगाएं ताकि मछलियाँ बाहर न निकल सकें।

रेशम

- टसर रेशम कीटपालन प्रारंभ हो चुका है इस हेतु समस्त कार्यवाही यथा विशुद्धीकरण आदि कार्य पूर्ण कर लिये जाय।
- उपरोक्त के दृष्टिगत कृषक/कीटपालक ई–डिस्ट्रिक विभागीय यू.आर.एल. ***http://sericulture.eservicesup.in*** पर अपना पंजीकरण कराते हुये आवश्यक कीटाण्ड मात्रा आरक्षित करा लें। किसी भी प्रकार की असुविधा/जानकारी के लिये दिये गये नंबर पर सम्पर्क करें 7388305554 ।
- मानसून व्यवसायिक फसल का कीट पालन 20 से 25 अगस्त के मध्य प्रारंभ होने जा रहा है इस हेतु कीटपालक/किसान 3 चक्रों में उपकरणों, कीट पालन भवन का विशुद्धीकरण का कार्य पूर्ण कर लें।

वानिकी

- पौधशाला में अंकुरण क्यारियॉ तैयार कर आम, गुलमोहर, महुआ, कटहल, जामुन, कंजी, नीम आदि के बीजों की बुआई शीघ्र कर लें। अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर/थैलियों में प्रतिरोपित कर रख दें।

- वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर रोपण कार्य करें।
- पौधों को रोपण से पहले सावधानीपूर्वक पालीथीन से निकालें तथा पिण्डी को टूटने न दें उसके उपरांत ही रोपण करें।

<u>राज्य आपदा प्रबंधन</u>

- बाढ़ बचाव हेतु सुरक्षा के उपाय हेतु ऊंचे स्थानों को पहले से चिन्हित करें तथा आवश्यकतानुसार खाद्य सामग्री जैसे बिस्कुट, लाई, भुना चना, गुड़, चूड़ा, नमक, चीनी व सत्तू इत्यादि एकत्र करें। जरूरी कागजात जैसे राशन कार्ड, पासबुक, आधार कार्ड को वॉटरप्रूफ बैग में रखें। क्लोरीन, ओ.आर.एस. तथा आवश्यक दवाइयां प्राथमिक उपचार किट में रखें। सूखे अनाज व मवेशियों के चारे को ऊंचे स्थान पर सुरक्षित रखें। बाढ़ की चेतावनी मिलते ही गर्भवती महिलाओं, बच्चों, वृद्ध, दिव्यांगजन एवं बीमार व्यक्तियों को तुरंत सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाएं।
- बाढ़ की स्थिति में उबला हुआ या क्लोरीनयुक्त पानी का उपयोग करें तथा बिजली का मुख्य स्विच व गैस रेगुलेटर को बंद रखें।
- बाढ़ की स्थिति में बाढ़ के संपर्क में आयी खाद्य सामग्रियों का सेवन न करें तथा डूबे हैंडपंप के पानी का उपयोग न करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 06 अगस्त, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः–

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(राजर्षि कुमार गौड़)
उप महानिदेशक (आर.पी.एम.सी.)

<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।

15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

(विनोद कुमार तिवारी)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की ग्यारहवीं बैठक दिनांक 31 जुलाई, 2025 की उपस्थिति

1. श्री ए.के. सिंह, सचिव, उपकार, लखनऊ।
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
3. डा. राजर्षि कुमार गौड़, उपमहानिदेशक (आर.पी.एम.सी), उपकार, लखनऊ।
4. डा. परमेन्द्र सिंह, उपमहानिदेशक (कृ.शि.त.ह.), उपकार, लखनऊ
5. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
6. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
7. श्री के.पी.सिंह, उप कृषि निदेशक, (सांख्यिकी), कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश (ऑनलाइन)।
8. श्री आदित्य सिंह, सीनियर टेक्नीकल असिसटेंट, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
9. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी कृषि मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ (ऑनलाइन)।
10. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ (ऑनलाइन)।
11. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
12. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
13. सुश्री कविता सिंह पटेल, सहायक रेशम विकास अधिकारी, रेशम विभाग, उत्तर प्रदेश।
14. श्री डी.पी. सिंह, प्रदर्शक रेशम उत्पादन, रेशम, उत्तर प्रदेश।
15. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
16. डा. प्रिया रंजन कुमार, सह प्राध्यापक (पषु चिकित्सा स्त्री रोग), बी.एच.यू. वाराणसी।
17. श्री अजय कुमार मिश्रा, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।